24

पूर्वी हिन्दी, पश्चिमी हिन्दी और राजस्थानी का भौगोलिक विस्तार और उनकी विशेषताएँ

– डॉ. दिनेश श्रीवास*

सेमेस्टर – II प्रश्नपत्र– IV (हिन्दी भाषा)
इकाई – 02 हिन्दी का भौगोलिक विस्तार
हिन्दी की उप भाषाएँ– पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

पूर्वी हिन्दी अर्धमागधी अपभ्रंश की सुता है। अर्थात् पूर्वी हिन्दी का विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। पश्चिमी हिन्दी और राजस्थानी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है, ऐसा अधिकतर विद्वानों का मत है। लेकिन शौरसेनी अपभ्रंश तथा पश्चिमी हिन्दी व राजस्थानी की संधिभाषा के रूप में अवहठ्ठ का नाम उल्लेख आता है। अवहठ्ठ तथा पश्चिमी राजस्थानी

*जन्म : 10/12/1977, बिलासपुर (छ.ग.), माता : श्रीमती आशा देवी, पिता : श्री गणेश श्रीवास, शिक्षा : बी.एस–सी. (गणित), एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल. (हिन्दी), पी–एच.डी. – "मोहन राकेश के नाटक और व्यक्ति स्वातंत्र्यः एक विश्लेषण" शीर्षक पर, रूचि : कविता, कहानी, नाटक तथा शोध–पत्र लेखन में विशेष रूचि, कई काव्य संग्रह व कहानी संग्रह प्रकाशनाधीन, कार्य : 1.कई राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र का प्रकाशन, 2. दस से अधिक राष्ट्रीय सेमीनारों में शोध पत्र की प्रस्तुति, 3. सह–संयोजक के रूप राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन, 4. पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन कोरबा मुख्यालय में अनेक बार "हिन्दी पखवाड़ा" में मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि, 5. जनगणना, मतदान आदि राष्ट्रीय महत्व के कार्यों में राज्य स्तर के प्रशिक्षक के रूप में कार्य, अन्य : आपके माता–पिता कम शिक्षित होने के बावजूद आपके लिए जीवन–अनुशासन के श्रेष्ठ शिक्षक बने, सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शा. इंजी. विश्वेश्वरैया महाविद्यालय कोरबा, छ.ग., आवास : ए–71, रामाग्रीन सिटी, बिलासपुर (छ.ग.), मोबा. नं:– 7770899636, 7974698680, E-mail : dineshsriwash77@gmail.com

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
C. G. COLLEGE, KORBA (C. G.)

व पहाड़ी भाषाओं के तत्कालीन शब्दों के वर्णों का भारीपन (प्रारंभिक शब्दों का) लगभग समान है। इसलिए भी ऐसा कहा जा सकता है। अतः इन भाषाओं की उत्पत्ति–आरेख से इसे समझने में सुविधा होगी–

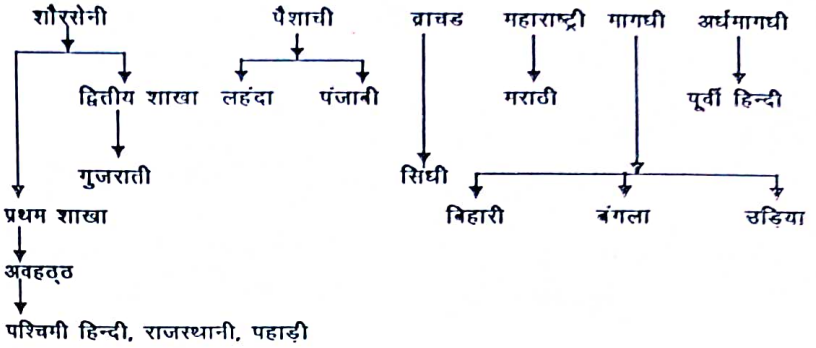

आरेख से स्पष्ट है कि शौरसेनी अपभ्रंश से पश्चिमी हिन्दी और राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति हुई है। अर्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी का उदय हुआ है।

पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी और राजस्थानी भाषाओं का भौगालिक क्षेत्र और विशेषताएँ:–

पश्चिमी हिन्दी का परिचयः– पश्चिमी हिन्दी का क्षेत्र पश्चिम में अम्बाला से लेकर पूर्व में कानपुर की सीमा तक एवं उत्तर में जिला देहरादून से दक्षिण में मराठी की सीमा तक चला गया है। इस क्षेत्र के बाहर दक्षिण में महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक और केरल के मुस्लिम बहुल क्षेत्र आते हैं। इस भाषावर्ग के बोलने वालों की संख्या जनगणना 1990 के अनुसार 6 करोड़ हैं। साहित्यिक दृष्टि से यह बहुत सम्पन्न भाषावर्ग है। सूरदास, नन्ददास, भूषणदेव, बिहारी, रसखान, भारतेन्दु और रत्नाकर आदि के नाम सर्वविदित हैं। ये सब इसी भाषावर्ग से संबंधित हैं। पश्चिमी हिन्दी में उच्चारणगत खड़ापन है। पश्चिमी हिन्दी की प्रकृति सामान्य भाषा हिन्दी अर्थात् खड़ी बोली के अनुरूप है। वास्तव में यही पश्चिमी हिन्दी भारत की सामान्य भाषा हो गई है।

पश्चिमी हिन्दी की बोलियाँ:– पश्चिमी हिन्दी में मुख्य रूप से पाँच बोलियाँ हैं–

GOVT. E.V.P.G. COLLEGE KORBA